

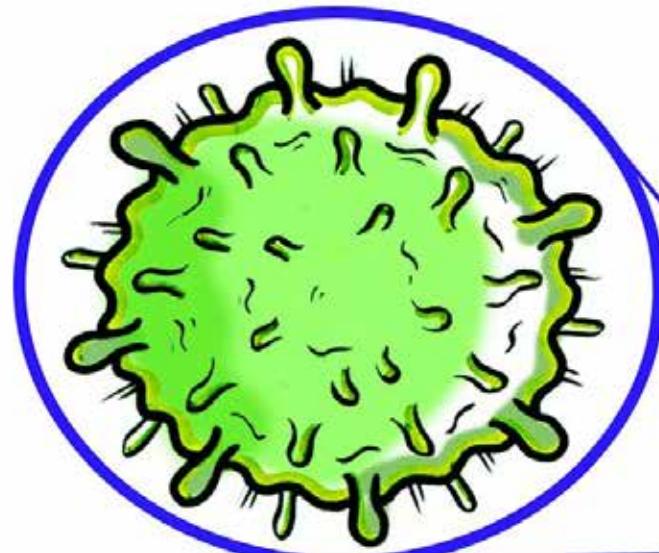


फिल्म एवं व्हिडियोज़ 2020

कोरोना

पूजा कुमारी

मिलकर कोरोना को हराना हैं।
घर से हमें कही नहीं जाना हैं।
हाथ किसी से नहीं मिलाना है।
चहरे से हाथ नहीं लगाना है।
बार—बार अच्छे से हाथ धोने जाना है।
सेनेटाईज़ करके देश को स्वच्छ बनाना है।
बचाव ही इलाज हें सभी को ये समझाना है।
कोरोना से हमको नहीं घबराना है।
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है।
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है।



GORONAVIRUS

वैज्ञानिक गतिविधियाँ और पर्यावरण

यासमीन, नवज्योति इण्डिया फाउन्डेशन

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैं 'परि' और 'आवरण' यहां पर परि का अर्थ हैं 'चारों ओर' और आवरण का अर्थ हैं 'धेरे हुए' हमारे चारों ओर फैले हुए आवरण को हि पर्यावरण कहते हैं। दूसरे शब्दों में मानव, वनस्पति, पशु—पक्षी, सभी जैविक और अजैविक घटकों को पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण में जितना महत्व मनुष्य का हैं उतना ही महत्व अन्य जीव—जन्तुओं का भी हैं।

वैज्ञानिक गतिविधियों के कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा हैं और दूसरी तरफ शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के नाम पर वनों को काटा जा रहा हैं। जिससे हमारा पर्यावरण और भी खतरें में आता जा रहा हैं। हमें को वन संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। वन हमारे पर्यावरण के संरक्षण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। हमारे देश में वन संरक्षण के लिये कानून भी हैं जिससे वनों को संरक्षित करने में काफी मदद मिली हैं। इसके साथ—साथ पर्यावरण के संरक्षण के लिये लगभग हमारी सभी औद्योगिक के लिये मानक भी तय किये चुके हैं जो वातावरण कि गुणवत्ता बनाये रखने में काफी महत्वपूर्ण हैं।

हमें अपने पर्यावरण कि रक्षा करने कि जरूरत क्यों हैं

प्राणी अपने जीवन हेतु वनस्पति जगत पर आश्रित हैं। मनुष्य हवा में उपस्थित ऑक्सीजन को सॉस द्वारा ग्रहण करके जीवित रहता है। पेड़—पौधे प्रकाश संश्लेषण कि प्रक्रिया के दौरान ऑक्सीजन वातावरण में छोड़ते हैं।

पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य हैं कि हम अपने चारों तरफ के वातावरण को संरक्षित करें तथा उसे जीवन के अनुकूल बनाए रखें। पर्यावरण और प्राणी एक दूसरे पर आश्रित हैं पर्यावरण कि रक्षा करना मतलब अपने आप को सुरक्षित करना है।

हमारे आस—पास कि साफ—सफाई

जीवन कि रक्षा के लिये पृथ्वी का संरक्षण अति आवश्यक हैं। वायु, जल, और मृदा प्रदूषण हमारे पर्यावरण को काफी प्रभावित कर चुके हैं। हमें व्यक्तिगत रूप सें चिंतन करने कि आवश्यकता हैं। हमें अपने स्तर पर जिम्मेदारी लेने कि जरूरत हैं। ताकि हम पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे सके जैसे हम अपना घर और आस—पास को साफ रखें, पोलिथीन य कोई भी ऐसी वस्तु का इस्तमाल ना करे या कम से कम करे जो हमारे वातावरण को नुकसान पहुंचाती हैं और हमें ये भी समझना चाहिए कि पर्यावरण के संरक्षण के लिए वनों का संरक्षण अति आवश्यक है।





पर्यावरण संरक्षण और जागरूकता

पूजा

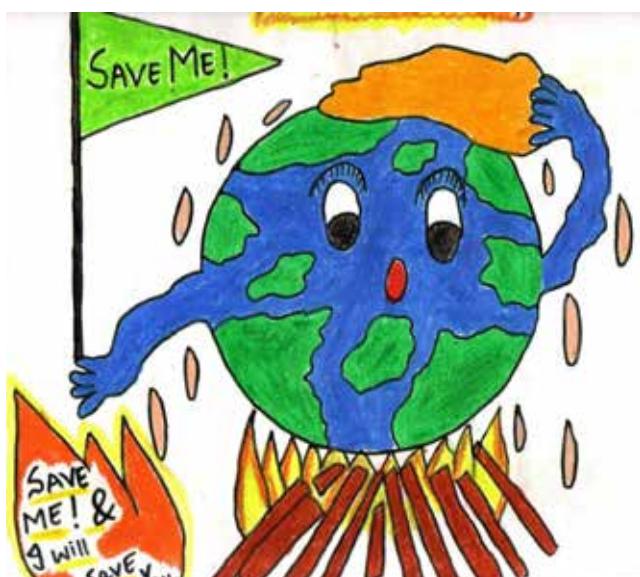
आज कल कि गतिविधियों से पर्यावरण को काफी नुकसान पहुँच रहा है। वाहनों और कारखानों से निकलने वाला धूआ हमारे वातावरण में हानीकारक गैसे छोड़ता हैं जो फेफड़े और हृदय रोगों का कारण बनता है। हमें नालीयों में घरों का कचरा नहीं फेकना चाहिये यह जल प्रदूषण का कारण बनता हैं क्योंकि ये कचरा नदियों में मिलता हैं और यही पानी हम पीते हैं जोकि कई बिमारीयों का कारण बन सकता है। वनों का कटना और कुछ वन्य प्रजातियों का लुप्त होना पर्यावरण के लिए एक खतरा हैं ये हमारे पारितंत्र को नुकसान पहुँचाता है। हमें आवश्यकता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हर व्यक्ति को जागरूक होना चाहिए।



साफ-सफाई का महत्व

रजिया, नई दिशा

आस-पास के वातावरण साफ-सुथरा हों तो किसे अच्छा नहीं लगता है। स्वच्छ और साफ जगहा सभी को भाती हैं। इसमें नगर निगम और सफाई कर्मीयों का बहुत योगदान होता है। वे तो अपनी तरफ से पूरा योगदान देते ही हैं परन्तु कुछ ग्रेज़िमेदार लोग कचरा फैलाने और गंदगी करने से बाज नहीं आते हैं। हम अपने आस-पास कि सफाई के लिए नगर निगम के सफाई कर्मीयों पर निर्भर नहीं होना चाहिए। हमें अपने आस-पास कि सफाई कि स्वयं ही ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए। ताकि हम खुद भी स्वरक्षण रहें और अपने वातावरण को भी स्वच्छ रख सकें। हमें अपने घर को रोज़ साफ करना चाहिए ताकि घर में कूड़ा जमा न हो। इस तरह हम घर के अंदर हानीकारक किटाणु और विषाणु को पैदा होने से रोक पाते हैं।



हमारा पर्यावरण

मर्जीना, नई दिशा

व्यक्ति अपने पर्यावरण में निवास करता है। वह भी अपने पर्यावरण का एक हिस्सा होता है। पर्यावरण में होने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से वह बहुत प्रभावित होता है। इसलिए ज़रुरी हैं कि हमारा पर्यावरण साफ – सुथरा रहें। पर्यावरण में किसी प्रकार का असंतुलन उत्पन्न न हो।

दुर्भाग्यवश कई कारणों से वर्तमान में हमारे पर्यावरण में काफी असंतुलन आ चुका है। जल, वायु और मृदा अब दूषित हो चुके हैं। इसके परिणामस्वारूप जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के लिए संकट, बाढ़, सूखा और स्वरक्षण से संम्बंधित कई समस्याएँ आ रही हैं। अतः हमें अपनी उन गतिविधियों पर नियंत्रण करना होगा जो हमारे पर्यावरण को हानि पहुँचाती हैं। हमें जल और वायु को शुद्ध रखने के लिए प्रयास करने होंगे, वनों को नष्ट होने से रोकना होगा तथा वन्य जीवों का संरक्षण करना होगा। पर्यावरण का संरक्षण करना हर व्यक्ति की ज़िम्मेदारी होनी चाहिए।

को संरक्षित करने के लिए प्रकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत आवश्यक है।

पर्यावरण बचाना क्यों आवश्यक हैं

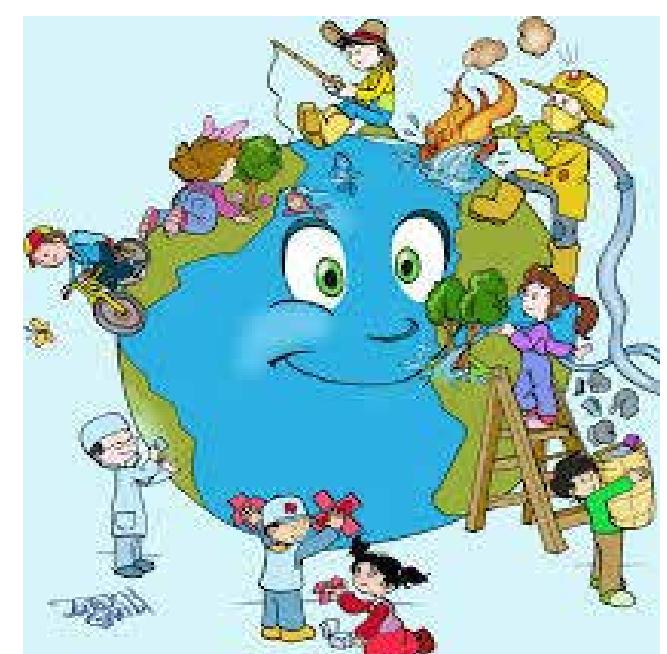
रोली, नई दिशा

पर्यावरण का मतलब हैं सभी प्रकृतिक परिवेश जैसे कि मृदा, वायु, जल, पौधे, पेड़, जीव-जन्तु, ठोस सामग्री और वन आदि। स्वस्थ वातावरण प्रकृति के संतुलन को बनाए रखता है और साथ ही साथ पृथ्वी पर उपस्थित सभी जीवित चीज़ों के सही से विकसित होने में मदद करता है। हलाकि नई तकनीक और मानव निर्मित चीज़े आज हमारे वातावरण को काफी नुकसान पहुँचा रही हैं और ये हमारे जीवन के साथ-साथ भविष्य में जीवन को भी खतरे में डाल रही हैं। यदि हम प्रकृति के अनुशासन के खिलाफ कुछ भी करते हैं यह वायुमण्डल, जलमण्डल और स्थलमण्डल को प्रभावित करता हैं जिससे मानव और अन्य जीवों का जीवन भी प्रभावित होता है। प्राकृतिक वातावरण के साथ मानव निर्मित वातावरण भी हमारे पर्यावरण का हिस्सा हैं इसमें इमारतें, सड़क आदि हैं। मानव निर्मित वातावरण प्रकृतिक वातावरण को प्रभावित करता है। प्रकृतिक वातावरण के घटक संसाधनों के रूप में उपभोग किये जाते हैं और यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इनका शोषण किया जाता है।

पर्यावरण और प्रकृतिक संसाधन

रुबी, नई दिशा

पर्यावरण का संबन्ध उन सभी जीव और निर्जिव चीज़ों से हैं जो कि हमारे आस-पास उपस्थित हैं और ये हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसके अन्तर्गत वायु, जल, मृदा, पेड़-पौधे, जीव और जन्तु आदि आते हैं। हलाकि एक कस्बे, शहर या गाँव में रहते हुए हम देखते हैं कि हमारे आस-पास का वातावरण और स्थान वास्तव में एक प्रकृतिक स्थान जैसे कि रेगिस्थान या जंगल या फिर एक नदि आदि से जिन्हें हम मनुष्य ने अपने उपयोग के लिए इमारतों, सड़कों और कारखानों में बदल दिया है। नवकरणीय संसाधन यानि वो संसाधन जिन्हें प्रकृति से पुनः प्रप्त किया जा सकता हैं जैसे वनस्पती, पानी और वायु आदि लेकिन कुछ संसाधन ऐसे भी हैं जो मानव जीवन के लिए अति आवश्यक हैं परन्तु इनका अत्यन्त उपभोग एक असंतुलन उत्पन्न कर सकता है। जो कि हमारे वातावरण को खराब कर सकते हैं जैसे वनों का नष्ट होना, पीने के पानी के स्रोतों का नष्ट होना आदि। इसलिए वातावरण





शुद्ध हवा और साफ पानी

भगवती, नई दिशा

पर्यावरण को संरक्षित करने कि इस लिए ज़रूरत हैं क्योंकि हमें शुद्ध हवा, पानी और वातावरण चाहिए। लेकिन आज लोग अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरण संरक्षण को भूल गए हैं। ये सोचे बिना कि पर्यावरण को पेड़ों के कटने से कितना नुकसान पहुंचेगा हम पेड़ों को काट रहे हैं। पेड़ों के काटने से वातावरण में ऑक्सीजन कि कमी होती हैं। प्लास्टिक के जलाने से खतरनाक गेंसे वातावरण में मिल जाती हैं जो कि मानव जाति के लिए खतरनाक हैं और ये हमारे वातावरण को दूषित भी करती हैं।

हमें अपने पर्यावरण को बचाना चाहिए

संजना, कक्षा 8

हमें अपने पर्यावरण को इस लिए बचाना चाहिए क्योंकि हमारे ज़रूरत कि सभी चीज़े हमें इसी से मिलती हैं। अगर किसी कारण पर्यावरण प्रदूषित होता हैं तो इसका सबसे बुरा प्रभाव हम पर ही होता हैं। हम अपने पर्यावरण पर पूर्ण रूप से निर्भर हैं और हमारे जीवन की गुणवत्ता हमारे वातावरण कि गुणवत्ता पर निर्भर करती हैं। हमें अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए सभी अथक प्रयास करने चाहिए।

पर्यावरण और हम

हरी मंडल, कक्षा 8 वी

हमारे वातावरण में कई चीजे उपस्थित हैं जैसे पशु-पक्षी, जीव-जन्तु और पेड़-पौधे। आज हमरी वजह से वातावरण नष्ट होता जा रहा है। हमारी ज़रूरतों के लिए हम पेड़-पौधों को काटा जा रहा है। ये हमें ऑक्सीजन देते हैं। वातावरण को शुद्ध रखने में इनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। वाहनों और कारखानों से निकलने वाला धूँूँ वायु प्रदुषण को बढ़ाता है वही कारखानों से निकलने वाला केमिकल और नालीयों के द्वारा घरों से निकलने वाला कचरा जल को प्रदूषित करता है।

पृथ्वी पर जब जीवन की शुरुआत हुई थी तब जीव-जन्तुओं कि बहुत सारी प्रजातियां हुआ करती थी लेकिन आज कुछ प्रजातियां लप्त हो चुकी हैं। और कुछ लुप्त होने कि कगार पर हैं। इनके लुप्त होने का एक कारण हमारे वातावरण में असंतुलन हैं। अब हमें अपने पर्यावरण को संरक्षित करने कि आवश्यकता है।

The children of Delhi Child Rights club during lockdown decided to show their skill not only through writing or drawing but through different types of crafts prepared out of waste .177 children participated in the online Art & Craft competition from different DCRC Partner organizations but it became difficult to select only best 3 because all are equally beautiful The following are the few best ones prepared by the children:



Created by- Ajay (Alamb)



Created by Roshita (Nav jyoti India Foundation)



Created by -Varsha (Udyam Trust)



Created by Savita (CASP Delhi Unit)



Created by-- Kemchand (Butterflies)

पर्यावरण कि सुरक्षा हमारी जिम्मिदारी

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना हैं 'परि+आवरण' यहा पर परि का अर्थ है 'चारों तरफ' और आवरण का अर्थ है 'घेरा' यानी प्रकृति में जो भी हमारे चारों ओंर हैं जैसे वायु, जल, मृदा, पेड़, पौधे आदि सभी पर्यावरण के अंग हैं। इन्हीं से हमारे पर्यावरण कि संरचना हुई है। प्रकृति के प्रति हमारा अमानवीय व्यवहार इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हम पर्यावरण के प्रति कितने उदासीन और संवेदन शुन्य हैं।

आज हमारे पास शुद्ध पय जल का अभाव है, सर्दियों में दिल्ली और आस-पास के राज्यों कि हवा जहरीली हो जाती हैं जो आगे चलकर गम्भीर बीमारीयों का कारण बनेगी। जंगल कटते जा रहे हैं। और शुद्ध जल के स्रोत नष्ट होते जा रहे हैं। कुछ बन्य जाति भी विलुप्त होती जा रही हैं। और गोगिकिकरण ने खेतों और वनों को ऐसी इमारतों में तबदील कर दिया हैं जो हनीकारक गेंसे

वातावरण में छोड़ रही हैं। हमें अपने वातावरण को शुद्ध रखने के लिये ठोस कदम उठाने होंगे अन्यथा हमें और हमारे आने वाली नस्लों को इसके दुष प्रभावों को झेलना होगा।

पर्यावरण

पर्यावरण का मतलब प्रकृतिक परिवेश जैसे: जल, भूमि, वायु, पशु-पक्षी, जंगल तथा ठोस सामग्री इत्यादि हैं। स्वस्थ्य वातावरण प्रकृतिक संतूलन बनाये रखता है साथ ही साथ प्रथ्वी पर जीवन को बढ़ावा भी देता है। परन्तु अब तकनीकी उन्नती से प्रकृतिक वातावरण में बिगड़ पैदा हो रहा है जिसके परिणाम स्वारूप जल, वायु और धनी प्रदुषण दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। ये सब अभी तो हमारे लिये हानीकारक हैं ही साथ ही साथ आगे आने वाली पीढ़ी के लिए भी खतरा है। हम सभी की ये जिम्मेदारी हैं कि प्रकृति को किसी प्रकार से हानि ना पहुंचायें और वातावरण को शुद्ध रखने के लिये ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करें।



My experience while I was locked in a toy shop

Abhigyan (Nai Disha)

It was a cold winter evening along with my father I went to the neighboring market to buy some gifts as next day is my birthday ,first we went to a bakery store and bought a cake and few chocolates for next day party,then my father asked me to buy few story books both for me and my sister after purchasing books we went to a grand toy store where there are so many beautiful toys ,my father asked me to pick up few toys as giftts for my birthday ,I was very happy and ran around the store to select and buy my favorite toys.Suddenly my father got an important cal from his shop he asked me to come with him immediately as he need to drop me at home and go to his sho after that ,I became v sad as I didn't even select my toys .The owner of the shop could see my sad face and asked my father to leave me at the shop and select the toys and after that one of his attendant will drop me at home as my house is nearby ,I told shop uncle that my house is near and I could go alone also but my father asked him to drop me at home and he will pay for the toys next day.After that daddy leftand shop uncle asked me to select my toys ,happiliy I went the around selecting toys then sddenly there was power failure and it was very dark ,the shopkeeper is asking all the customers to keep calm and stand where they are as he isarranging generator ,I got very sacred and sat behind a huge teddy bear and I don't know when did I felt sleepy and when I got up I could see anybody inside thw shop, it was empty I ran towards the door but it was locked then I went near the window and could see the shop uncle and his attendant talking and discussing about me ,the attendant informed him that he could find me anyehere ,the shop uncle told" that these kids are very naughty and I think he left home without informig us ,anyway I will know tomorrow from his father what toys he have selected."I tried my best to shout and say them that I am inside the sho but my voice could not be heard and after some time they left ..I was very sacred and started crying thinking that whole night I have to spend in this shop without my parents but suddenly a positive thught came to my mind that I always want to play with toys and today I got the opportunity to play then I started playing and enjoying with all the toys and when I felt hungry ate the cake and chocolated I had bought for the party and therewas a water filter in the shop so I drank water from there.I keep palying with all the toys and I don't know when I slept and I was awake by sudden noise and when I opened my eyes I could see my mother crying along with my father,shop uncle and police uncle .My parents complained to police about my missing and they came here to search me ,my mother hugged me and cried ,daddy thanked the police uncle and shop uncle asked sorry for his careless but my father forgave him and happily with many toys I went home.



पर्यावरण का संरक्षण हर एक व्यक्ति कि जिम्मेदारी

व्यक्ति अपने पर्यावरण में निवास करता है। वह अपने पर्यावरण का एक हिस्सा होता है। पर्यावरण में होने वाली सभी गतिविधियों से वह बहुत प्रभावित होता है। इसलिए यह जरुरी है कि पर्यावरण साफ सुथरा रहें। पर्यावरण में किसी प्रकार का असंतुलन उत्पन्न न हो। दुर्भाग्यवश कई कारणों से वर्तमान समय में हमारे पर्यावरण में असंतुलन स्थिती उत्पन्न हो गई है। जल, वायु, मिटटी, वन जैसे प्राकृतिक तत्व प्रदूषित हो रहे हैं। इसका परिणाम है कि जलवायु में परिवर्तन, जैव विविधताओं के लिये संकट, बाढ़, सूखा और स्वास्थ्य संबंधित अनेक समस्याएँ। अतः हमें अपनी गतिविधियों को नियंत्रित करना होगा जो पर्यावरण को तरहा तरहा से हानि पहुचाँ रही हैं। हमें अपने वातावरण को शुद्ध रखना होगा। हमें जल और वायु को शुद्ध बनायें रखने के लिये प्रयास करने होंगे। वनों को नष्ट होने से रोकना होगा तथा वन्य जीवन को संरक्षित करने के भी प्रयास करने होंगे। अपने पर्यावरण को साफ—सुथरा रखना हर व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए।

हमारा पर्यावरण

हमारे चारों तरफ जो कुछ हैं तथा जो हमें घेरे हुए हैं उसे हम हमारा पर्यावरण कहते हैं। इसमें जैविक, अजैविक, प्रकृतिक और मानव निर्मित वस्तुएँ आती हैं। प्रकृतिक पर्यावरण में पेड़, झाड़िया, बगीचा, नदी, झील, हवा इत्यादि शामिल हैं। प्रचीन काल में मानव प्राकृति के समीप निवास करते थे। इसी कारण वह ज्यादा स्वस्थ्य रहते थे और ज्यादा वर्षों तक जीवित भी रहते थे। परन्तु आज हमारे चारों तरफ दूषित वातावरण है जिसकी वजह और कोई नहीं बल्कि हम खुद हैं। इमारतें, वाहन, सड़कों पर खतरनाक गैस, घर से रेफरीजिरेटर व ऐयरकंडिशन से निकलने वाली गैसें इत्यादि। प्रकृति में जो कुछ भी उपस्थित है वे सभी हमारे लिये लाभदायक हैं इस लिए प्रकृति से छेड़ छाड़ करके हम कुछ आराम तो पा सकते हैं लेकिन आगे आने वाली पीढ़ी के लिये मुसीबत खड़ी कर सकते हैं।



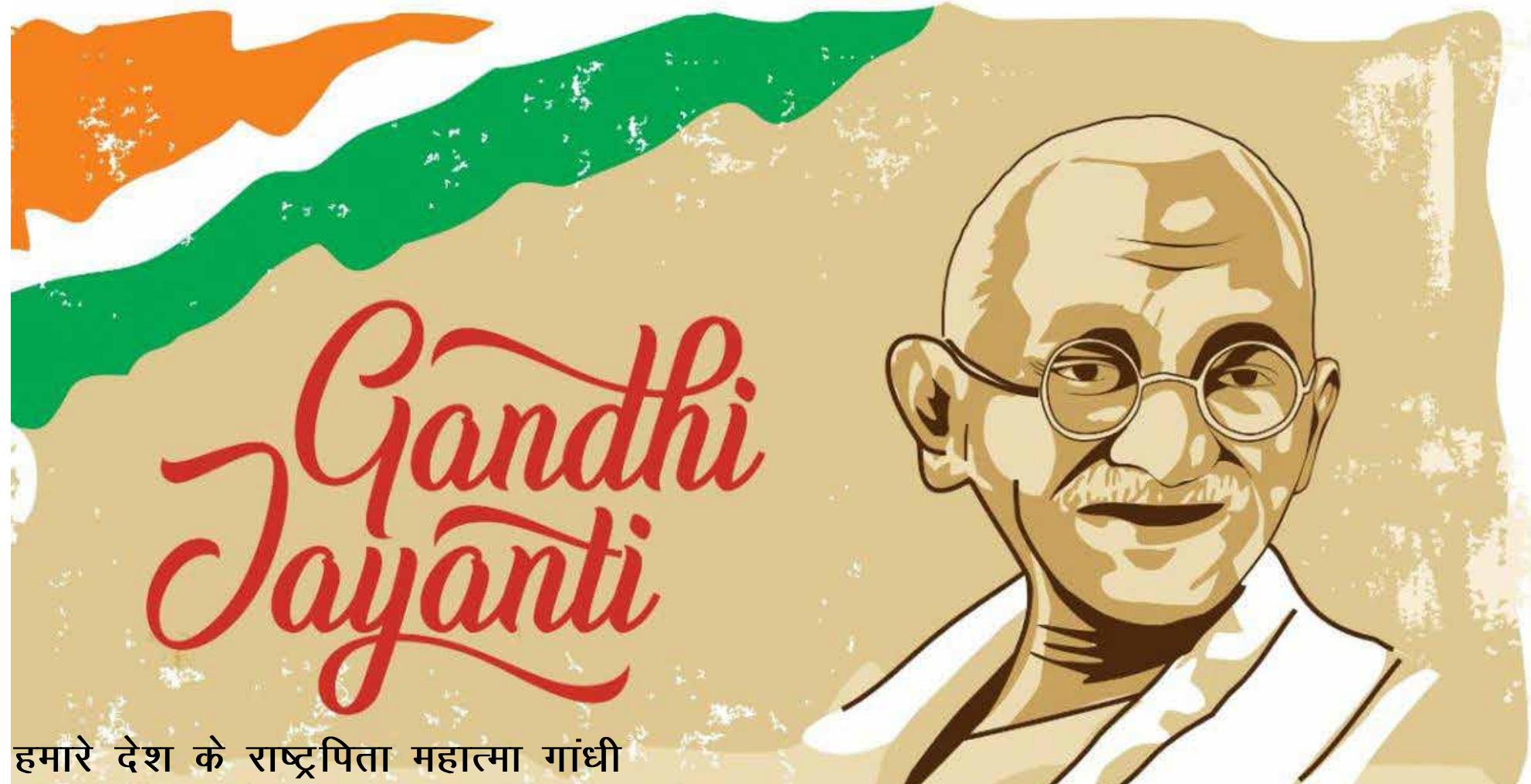
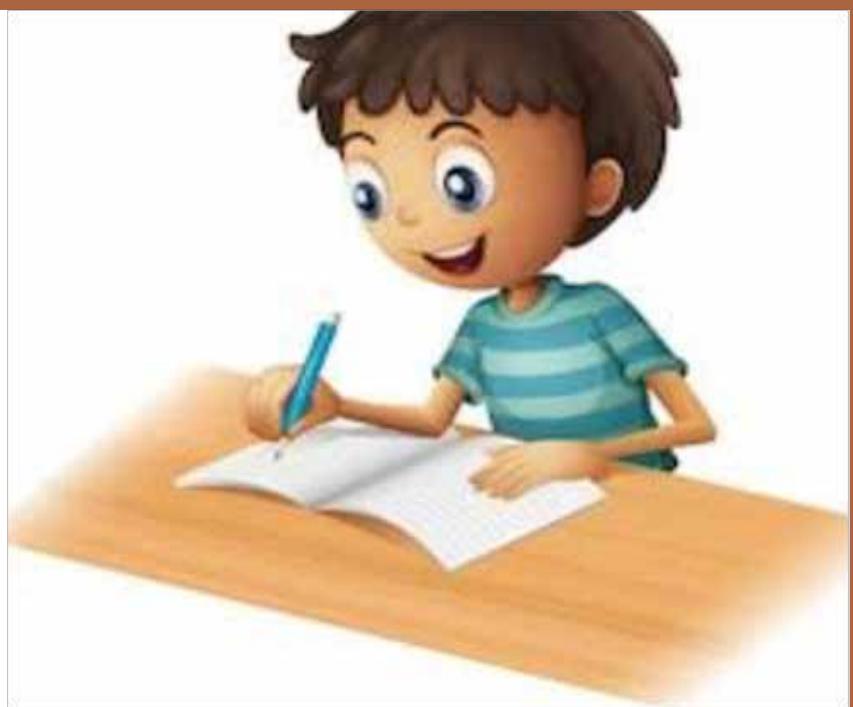


संपादक की कलम से

हेलो दोस्तों

मैं हूँ तनवीर आपका बाल संपादक। सभी बाल साथीयों को बहुत – बहुत शुभकामनाएँ कि इस लॉकडउन के दौरान सभी साथीयों ने कब्ल के अंतरगत होने वाली सभी चित्रकला, रचनात्मक लेख और कविता लेखन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। हमारे कई साथीयों ने पुरुस्कार भी जीते और जो साथी पुरुस्कार नहीं जीत सके उनका प्रदर्शन भी काफी प्रशंसनीय हैं।

जैसा हम सभी जानते हैं कि हमारी शिक्षा अब ऑनलाइन हो चुकी हैं और अब हम घर पर ही रहकर ऑनलाइन के माध्यम से अपनी पढ़ाई कर रहे हैं। इसी दौरान हमारे साथीयों ने सामाजिक दूरी और अन्य नीयमों का पालन करते हुए 5 जून 2020 को पर्यावरण दिवस मनाया उन्हने अपने समुदाय में वृक्षारोपण किया और कब्ल द्वारा आयोजित ऑनलाइन चित्रकला, निबन्ध लेखन और कविज़ प्रतियोगिता में भी भाग लिया जिसके कुछ चित्र नीचे दिये हैं।



हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मागांधी का आज 2 अक्टूबर को जन्मदिन है। गांधी जी जिन्हें पूरा देष प्यार से बापू के नाम से जानता है, नेन सिर्फ हमारे देष को अंग्रेजों से आजादी दिलाने में अहम भूमिका निभायी बल्कि उनका पूरा जीवन ही एक सीख की तरह है जिसके अगर कुछ हिस्से पर भी अमल कर लिया जाए तो आपका पूरा जीवन संवर सकता है। खासकर बच्चे, गांधी जी की लाइफ से इन अहम बातों को सीख सकते हैं

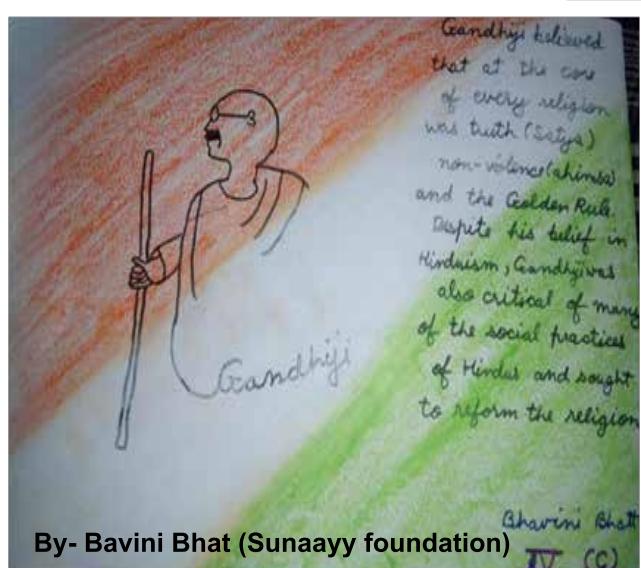
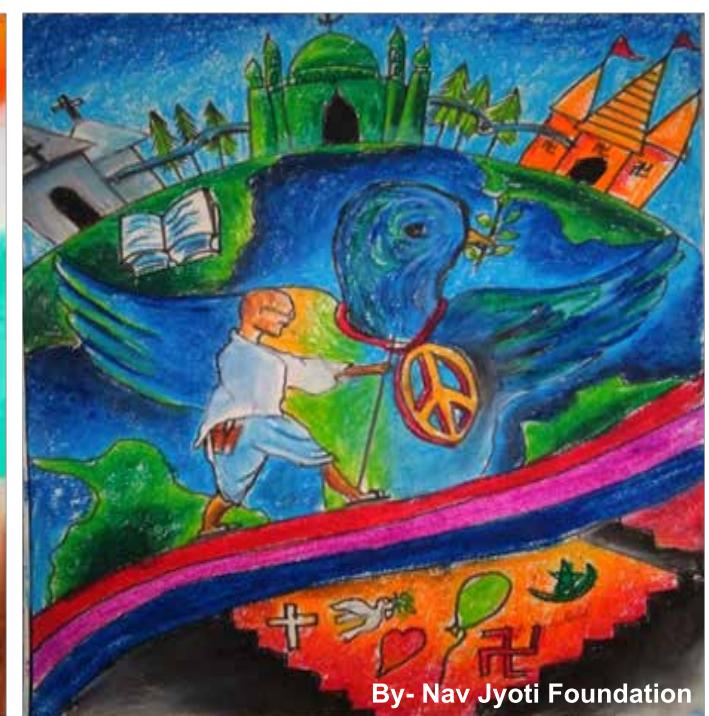
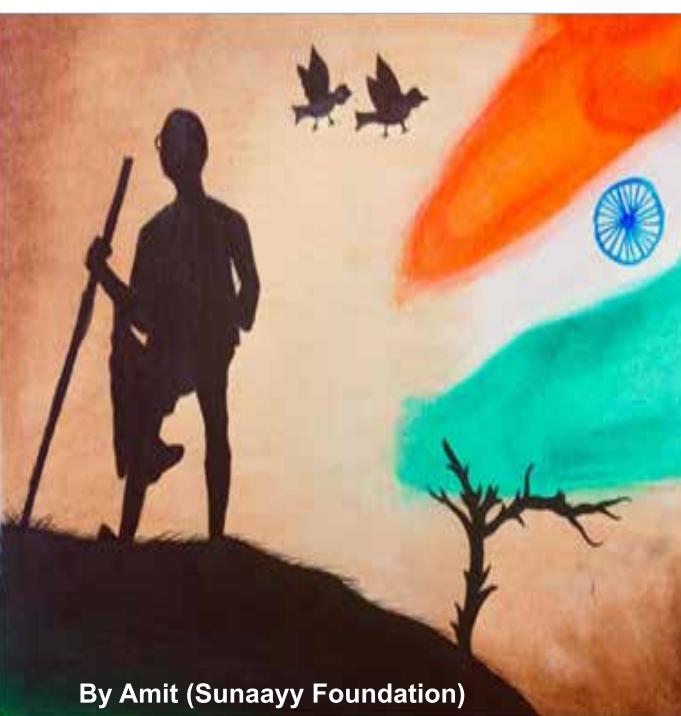
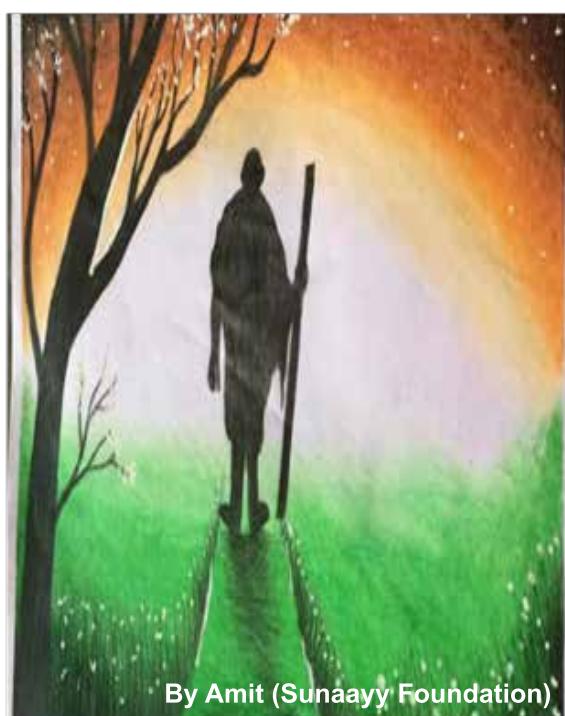
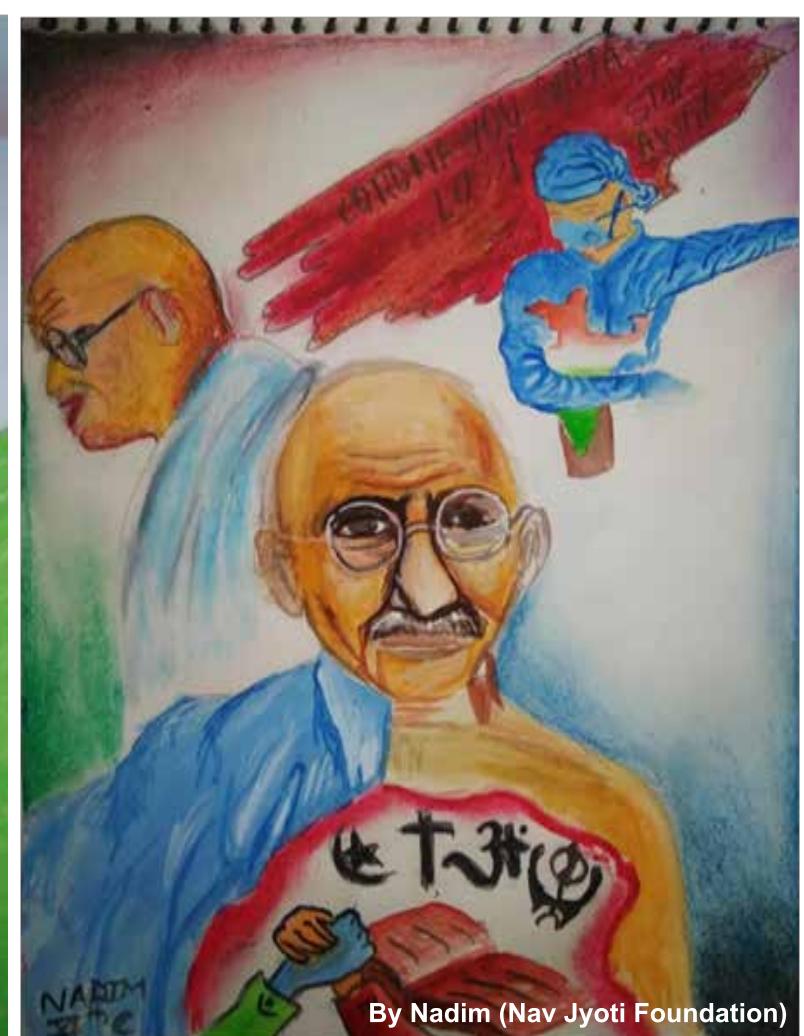
खुद पर विष्वास करना

इतिहास में देखें तो यह बात साबित हो जाती है कि महात्मा गांधी ने जोभी किया वह सोच से परे था। उन्होंने हमें जो सबसे बड़ी सीख दी वोये है कि अगर इंसान को खुद पर भरोसा हो तो उसके लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं है। आपके साथ भले ही कोई खड़ा हो या न हो लेकिन अगर आपको पता है कि आप जो कर रहे हैं वह सही है, तो खुद पर विष्वास रखें क्योंकि सफल होने के लिए यह क्वॉलिटी सबसे जरूरी है।

छोटा हो या बड़ा, हर किसी का सम्मान करना

महात्मा गांधी ने अपनी आखिरी सांस तक हर किसी को एकबराबर दर्जा दिलाने के लिए लड़ाई लड़ी। दक्षिण अफ्रीका में जब उन्हें पक्षपात का सामना करना पड़ा तो उन्होंने इस अनुचित व्यवहार के खिलाफ आवाज उठायी। उन्होंने यह सीख दी कि हर किसी को एक समान समझो और एक समान दर्जा दो। लिहाजा बच्चों के लिए बेहद जरूरी है कि वह हर किसी का एक समान रूप से सम्मान करें। सम्मान पाने का मनदंड, पैसा बिलकुल नहीं होना चाहिए।

On the birth anniversary of Bapu, DCRC have organized an online drawing and creative writing competition and children from different organizations have participated on it. Few of the drawings and creative writing are as follows :





कहानी— 1

एक बार एक साधु महाराज पास के जंगल से गुजर रहे थे। तो उनकी नज़र एक उदास कौआ पर पढ़ी। कौआ बहुत दुखी था। साधु महाराज कौआ के पास गए और कहा “ओ! कौआ तुम क्यों उदास हों।” कोई बोला’ आप मेरा दुख नहीं समझ पाओगे। साधु महाराज बोले के तुम बोलोतो सही।” समझना और ना समझना यह मेरा काम हैं।” कौआ बोला” क्या बताऊ भगवान ने भी यह मुझे कैसा रंग दिया हैं। कोई भी मुझे प्यार नहीं करता। मेरे कॉव—कॉव करने से लोग मुझे भगा देते हैं। सभी मुझे मनहूस कहते हैं और मुझसे घृणा करते हैं।”

साधु बोला तो तुम क्या चाहते हो। कोई बोला बस में इतना चाहता हूँ कि बस मेरा रंग बदल जाए। साधु बोला ‘बस इतनीसी बात’। और पूछूँ कि तुम्हें किसका रंग चाहिए ?

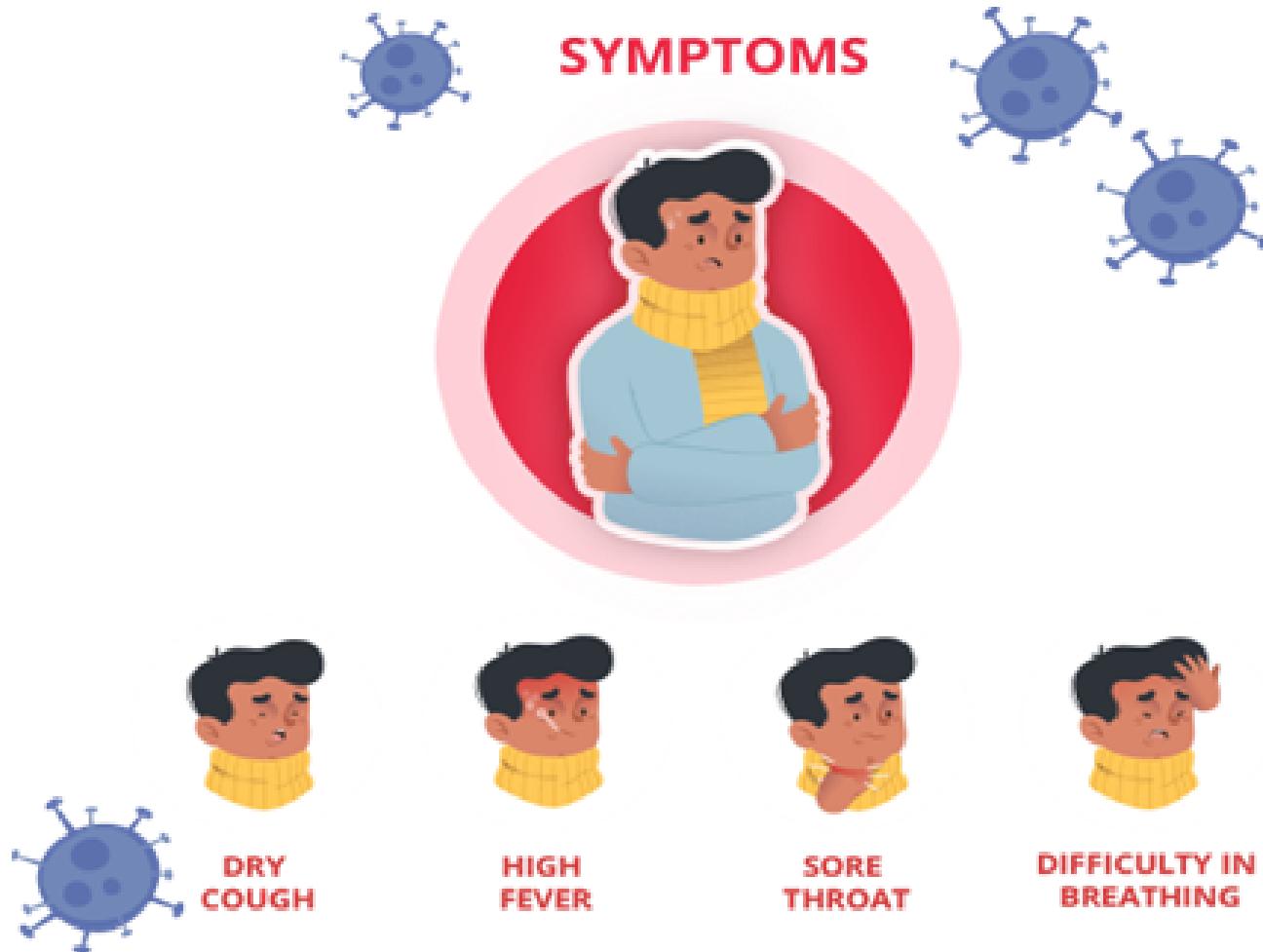
कोई बोला ‘हंस का रंग’। साधु बोला में तुम्हें हंस का रंग दे दुंगा परन्तु तुम्हें हंस को पूछकर उस को मेरे पास लाना होगा। कौआ वहा से उड़ा और सीधा हंस के पास पहुँचा। तो उसने देखाकि हंस भी अपनी किस्मत से परेशान हैं। वह भी अपने रंग से परेशान हैं। जब तोता हंस के पास पहुँचा, तब हंस अपने मित्र से कह रहा था कि ‘भगवान ने यह मोत का सफेद रंग क्यों दिया। कौआ ने हंस कि यह बात सुनी और वह हंस को अपने साथ साधु महाराज के पास ले आया। साधु ने हंस से पूछूँ ‘तुम बताओं तुम्हें किस का रंग चाहिए।’ तो हंस बोला’ मुझे ता तोते का रंग चाहिए। ‘साधु महाराज ने बोला तुम दोनों तोते के पास जाओं उसे पूछो और उसको मेरे पास लेओ। एक हरे—भरे पेड़ पर तोता बेठा था। हंस और कौआ ने उस पेड़ के चार चक्कर लगाए। और पॉच वे चक्कर पर तोता मिला। हंस बोला वाह! तोते भाई तुम्हारा हरा रंग। तोता बोला बस करो। हरे पेड़ पर मेंहरा तुमको नहीं दिखा यह भी कोई रंग हैं। तो अब कौआ, हंस और तोता साधु के पास आए तो साधु बोला। तोते तुझे में किस का रंग दू? तोता बोला ‘मुझे तो किसी का नहीं बस मोर का रंग दे दो।’ साधु बोला चलो में तुम्हें मोर का रंग दे दुंगा मगर एक बार मोर से पूछलो। वे तीनों अब मोर को ढँढने चले गए और साधु भी उस जंगल से चला गया। जब वे तीनों मोर के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि मोर एक दम खुश हैं। तीनों सोचने लगे कि मोर का ही रंग लेंगे। सबसे पहले मोर ने तोते से कहा कि तुम कितने भाग्य शाली हो कि तुम मोर हो। मोर बोला कि’ मैं यह मानता हूँ कि मुझमें कोई कमी नहीं हैं लेकिन मुझे अगले एक घण्टे का नहीं पता मेरी मोत किसी भी शिकारी के हाथों कभी भी हो सकती हैं। ‘अब कौआ अपनी ही इच्छा में उलझ गया और उसने मोर से पूछूँ तो बताओ कोन इस दुनियों में सुखी हैं। तो मोर ने कहा ‘तू हूँ तू कौआ ‘तू ही खुश हैं। कोई समझ गया और साथ ही हंस और तोता भी समझ चुके थे कि साधु महाराज उन्हें क्या समझाना चाह रहे थे। और सभी अपने—अपने रास्ते चले गए और यह समझ चुके थे कि खुश रहने में ही भलाई हैं।

पर्यावरण सुरक्षा

सबिया, नवज्योति इण्डिया फाउन्डेशन पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना ही पर्यावरण संरक्षण हैं। पर्यावरण संरक्षण का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण और प्रकृतिक संसाधनों कि रक्षा करना हैं। आज के युग में हम विकास के नाम पर पर्यावरण को लगातार चोट पहुँचा रहे हैं। अब हम इस स्थिति में पहुँच चुके हैं कि पर्यावरण के संरक्षण के लिये ठोस कदम उठाने होंगे ताकि हम अपने वातावरण को शुद्ध रख सके। अगर कारखानों से निकलने वाली गैसे, कचरा और गंदे पानी को नियंत्रित किया जा सके तो वायु और जल को दूषित होने से काफी हद तक बचाया जा सकता है। हमें पर्यावरण को संरक्षित करने के लिये वृक्ष भी लगाने होंगे और साथ ही साथ जंगलों को कटने से रोकना होगा।



How to protect your self from Covid -19



पर्यावरण की रक्षा करने की आवश्यकता क्यों

अंजली, नव ज्योति इण्डिया फाउन्डेशन पर्यावरण की सुरक्षा हमारी ज़िम्मेदारी हैं। आज जंगल कटते जा रहे हैं और हमारे वातावरण में शुद्ध हवा दुर्लभ हो गई हैं। जल भी दूषित हो रहा है। बहुत सारे वन्य जीव विलुप्त होते जा रहे हैं। उधयोगिकरण ने खेतों और जंगलों को निगल लिया है। कारखानों से निकलने वाली खतरनाक गैसे वायु को प्रदूषित करती हैं।

पर्यावरण को संरक्षित करने कि शुरूआत हमसे होती है। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने आस—पास साफ सफाई रखें, कोई भी ऐसा काम न करें जो हमारे वातावरण को हानी पहुँचाता है—जैसे ऐयरकंपंडीशन को ज्यादा न चलाना, अपने निजि वाहन का इस्तिमाल न करके पब्लिक कनवियन्स का इस्तिमाल अधिक से अधिक करना आदि।



www.pran.in



PRAN'S FEATURES

67

आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं

अगर आपकी उम्र 9 से 16 वर्ष के बीच हैं तो आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं।

अगर आप बाल पत्रकार के रूप में अपने आस-पास घट रही घटनाओं को इस अखबार के माध्यम से उठाना चाहते हैं तो आपका स्वागत है।

आप बच्चों से जुड़े किसी भी मुद्रदे पर अपने विचार, लेख, फोटो, वित्र आदि इसमें छापने को भेज सकते हैं शर्त बस इतनी है कि यह आपकी अपनी रचना होनी चाहिए। यह अखबार आपकी राय को दूर-दराज इलाकों तक पहुंचाने की पूरी-पूरी कोषिष्ठ करेगा।

आप अपनी रचना हमें लिखकर भेजें और जहां भी जरूरत हो संदर्भ का उल्लेख जरूर करें। आप अपनी रचना के साथ अपना नाम, उम्र, स्कूल/संस्था, पूरा पता फोन नम्बर आदि जरूर भेजें।

हमारा पता : संपादक मंडल, दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स, द्वारा बटरफ्लाईज़,
यू - 4 ग्रीन पार्क एक्स्पोर्ट बैच, नई दिल्ली - 110016

पुरस्कार : तीन सबसे अच्छी रचनाओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे

यह अखबार 9 से 16 वर्ष की उम्र के बच्चों द्वारा लिखित, संपादित एवं प्रकाशित है। इसका उद्देश्य दिल्ली एवं इसके आसपास के इलाकों को बच्चों के लिए सुरक्षित एवं दोस्ताना बनाना है। यह अखबार दिल्ली बाल अधिकार क्लब द्वारा बटरफ्लाईज़ के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है।

दिल्ली बाल अधिकार क्लब C/O बटरफ्लाईज़, 163/4, प्रधान वाली गली, गॉव जौनापुर नई दिल्ली 110047

भारत फोन : +91-11-35391068, 69, 70 E-mail : butterflies@vsnl.com

परियोजना सहायता : Misereor Katholische Zentralstelle, Furenwicklungshilfe.V. Germany

क्लब निजी वितरण के लिए



सहयोग राशि: 5 रुपये

दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स संपादकीय दल

मुख्य संपादक

- सुरजा चौहान
- सह संपादक
- प्रियंका वैध
- समीर
- नर्मदी मेहरा
- उपसंपादक
- आसिफ
- अंशुल शर्मा
- तनवीर शेख
- शिवम
- सुजीत
- वीशिता
- संवाददाता
- रोहित
- दीपक चंद्र सिंह
- रफीक शेख
- नुरुल
- मनोज
- विवेक
- व्यस्क संपादकीय सलाहकार
- मुसुमी बरुआ

